नव भारत
| संस्थापक : स्व. रामगोपाल माहेश्वरी | प्रेरणा स्त्रोत : स्व. प्रफुल्ल माहेश्वरी |

आस्था की भीड़ के बीच व्यवस्था का पतन

सीहोर जिले के कुबेरेश्वर धाम में हाल ही में जो भगदड़ हुई, उसने एक बार फिर हमें यह सोचने पर मजबूर कर दिया है कि क्या हम एक सभ्य समाज के रूप में जनसुरक्षा को लेकर अब भी गंभीर नहीं हो पाए हैं? इस त्रासदी में सात लोगों की असमय मौत हुई. यह कोई प्राकृतिक आपदा नहीं थी, यह एक मानवजनित विफलता थी, जिसे रोका जा सकता था, टाला जा सकता था, यदि नियोजन होता, समन्वय होता और संवेदनशीलता होती.

कावड़ यात्रा के इस आयोजन में लाखों श्रद्धालु उमड़े. उनमें से अनेक बिना पंजीकरण के आए. यह स्पष्ट करता है कि आयोजकों और स्थानीय प्रशासन के बीच न तो किसी प्रकार की पूर्व तैयारी थी, और न ही आपसी समन्वय का कोई ढांचा. जब लाखों लोगों के एकत्र होने की सूचना पहले से हो, तो क्या यह प्रशासन का कर्तव्य नहीं बनता कि वह सुरक्षा व्यवस्था, आपातकालीन चिकित्सा सेवाएं, जलापूर्ति, और ट्रैफिक नियंत्रण की प्रभावी योजना बनाए? दुर्भाग्य से ऐसा कुछ नहीं हुआ. इस घटना ने हमें यह सोचने पर विवश किया है कि क्या धार्मिक आयोजनों की सफलता केवल भीड़ जुटाने से तय होती है? क्या हमारे धार्मिक केंद्रों में 'आस्था' का अर्थ व्यवस्था से विमुख होना है? और क्या हमारी प्रशासनिक प्रणाली तब तक निष्क्रिय रहती है जब तक किसी आयोजन की भयावह परिणति सामने न आ जाए? यह त्रासदी केवल भीड़ की वजह से नहीं हुई, बल्कि आयोजना की कमी, जिम्मेदारी के अभाव और अव्यवस्था के सामूहिक गठजोड़ से हुई है. 7 मौतें यह भी दर्शाती हैं कि आयोजन स्थल पर न तो प्राथमिक चिकित्सा उपलब्ध थी और न ही जल वितरण की समुचित व्यवस्था. क्या यह प्रशासनिक लापरवाही नहीं है?

राज्य सरकार द्वारा आर्थिक सहायता और जांच की घोषणा जरूर एक प्रारंभिक क़दम है, लेकिन यह घटना किसी भी तरह से 'साधारण भूल' नहीं कही जा सकती. यह एक सिस्टम की असफलता है, जिसके दोषियों को केवल जांच तक सीमित न रखते हुए, सख्त कार्रवाई के दायरे में लाना होगा. केवल आयोजन रोकना, या पंडाल हटाना ही समाधान नहीं है. यह आवश्यक है कि ऐसे आयोजनों के लिए एक स्थाई प्रोटोकॉल बनाया जाए, जिसमें रजिस्ट्रेशन प्रक्रिया, ऑनलाइन सूचना प्रणाली, मेडिकल इन्फ्रास्ट्रक्चर, भीड़ नियंत्रण की तकनीक और प्रशिक्षित वालंटियर्स की टीम की पूर्व व्यवस्था हो. केंद्र और राज्य सरकारों को चाहिए कि वे देशभर के धार्मिक आयोजनों के लिए एक मानक संचालन प्रक्रिया तैयार करें, जो किसी भी आयोजन को धार्मिक स्वतंत्रता के साथ-साथ सुरक्षा के ढांचे में बांध सके. इससे आयोजनों की गरिमा भी बनी रहेगी और जनजीवन भी सुरक्षित रहेगा. इसके अलावा इंदौर भोपाल जैसे व्यस्त मार्ग पर जिस तरह से घंटो जाम लगा रहता है वह भी चिंता का विषय है.इस संबंध में आयोजकों के साथ ही पुलिस और प्रशासन के भी अपने दायित्व हैं जिनका निर्वहन योजनाबद्ध तरीके से होना चाहिए.

कुबेरेश्वर धाम की यह घटना पहली बार नहीं हुई. जाहिर है आयोजकों और प्रशासन ने पिछली घटनाओं से सबक नहीं लिया था, यह बेहद दुर्भाग्यपूर्ण है. बहरहाल, कुबेरेश्वर की यह घटना हमें झकझोरती है, न केवल मृतकों के परिवारों के दर्द से, बल्कि इस सच्चाई से भी कि जब व्यवस्था श्रद्धा के सामने असहाय हो जाती है, तब ईश्वर भी हमें क्षमा नहीं करता. अब वक्त है, सिर्फ श्रद्धा की नहीं, जिम्मेदारी की भी परिभाषा गढ़ने का.

राष्ट्रीय एकता का प्रतीक राखी

प्रो. विवेकानंद तिवारी
अध्यक्ष, आम्बेडकर पीठ एचपीयू, शिमला

बंगाल विभाजन का विरोध विस्फोटक और सर्वव्यापी था. भारतीय राष्ट्रीय कांग्रेस ने स्वदेशी आंदोलन की घोषणा की और जनता से सभी विदेशी वस्तुओं का बहिष्कार करने का आह्वान किया, जिससे औपनिवेशिक सरकार को सबसे ज़्यादा चोट पहुँची. विदेशी कपड़ों का सामूहिक दहन एक आम बात हो गई. लेकिन बंगाल में बाकी सब चीज़ों की तरह, इस विरोध ने भी बंगाल के महानतम प्रतीक, रवींद्रनाथ टैगोर के नेतृत्व में एक अनोखा रूप धारण कर लिया.

टैगोर ने विभाजन के दिन, 16 अक्टूबर को राष्ट्रीय शोक का दिन घोषित किया था - उस दिन बंगाली घरों में खाना नहीं पकाया जाएगा. बंगाली हिंदुओं और मुसलमानों के बीच के बंधन को दर्शाने के लिए, टैगोर ने राखी को चुना, जो एक पवित्र धागा है जो बहन द्वारा भाई की कलाई पर उसकी रक्षा के बदले में बाँधा जाता है. परंपरागत रूप से, बहनें अपने भाई की लंबी उम्र की कामना करती थीं, क्योंकि भाई उसके जीवित रहते हुए उसकी रक्षा करने का वचन देता था. इसके बजाय, टैगोर चाहते थे कि हिंदू और मुसलमान एक-दूसरे को राखी बाँधें, जिससे जीवन भर सुरक्षा का एक ऐसा बंधन बने जिसे कोई तोड़ न सके.

टैगोर ने 16 अक्टूबर को अपने दिन की शुरुआत गंगा में डुबकी लगाकर की. गंगा तट से, एक जुलूस उनके साथ सड़कों पर निकला और मिलने वाले सभी लोगों की कलाई पर राखी बाँधी. उत्साही कवि के पास ढेर सारी राखियाँ थीं, लेकिन उनके साथ आए लोगों को लगा कि उन्होंने हद कर दी है जब उन्होंने अपने घर के दक्षिण में स्थित एक मस्जिद में जाकर मौलवियों की कलाई पर राखी बाँधी. टैगोर कभी भी पीछे हटने वालों में से नहीं थे - सौभाग्य से, मौलवियों को भी कोई आपत्ति नहीं हुई और जुलूस आगे बढ़ता रहा. सड़क के दोनों ओर भारी भीड़ जमा हो गई थी. टैगोर के साथ चल रहे लोग एक गीत गा रहे थे जो उन्होंने इस अवसर के लिए विशेष रूप से लिखा था, जिसमें ईश्वर से बंगाल की सुरक्षा और अखंडता की प्रार्थना की गई थी. छतों से महिलाएँ जुलूस पर मुरमुरे छिड़क रही थीं और शंख बजा रही थीं.

उसी दोपहर, फेडरेशन हॉल की आधारशिला रखी गई - एक भव्य भवन जो दो बंगालों की एकता का प्रतीक था. बैरिस्टर आनंद मोहन बोस को बैठक की अध्यक्षता करनी थी, लेकिन वे वृद्ध और बीमार थे, इसलिए टैगोर ने उनका भाषण पढ़ा. वहाँ से दिन का दूसरा जुलूस शुरू हुआ, फेडरेशन हॉल से बागबाजार स्थित पशुपति और नंदलाल बसु के घर, भव्य बसु बटी तक. यहाँ राष्ट्रीय कोष की घोषणा की गई और जनता से योगदान माँगा गया. यह कोष योग्य छात्रों को प्रायोजित करेगा और बंगाली उद्यमियों को वैज्ञानिक एवं तकनीकी प्रशिक्षण के लिए इंग्लैंड जाने के लिए वित्तीय सहायता प्रदान करेगा. इससे, बंगालियों को आशा थी कि समय के साथ विदेशी आयातों पर उनकी निर्भरता कम हो जाएगी, क्योंकि अधिक से अधिक वस्तुएँ स्वदेश में ही उत्पादित होने लगेंगी.

मजूमदार ने अपनी पुस्तक टैगोर बाय फायरसाइड में लिखा है, उन्होंने रक्षाबंधन की धार्मिक परंपरा को विविधता में एकता के धर्मनिरपेक्ष मूल भाव में बदल दिया और बंग भंग का विरोध किया. एक ही धागा समुदायों को एक साथ बुनता है उस समय के एक प्रभावशाली नेता, टैगोर ने अपने साथी नागरिकों से अपनी सांप्रदायिक पहचान से ऊपर उठकर एकता में एक-दूसरे को गले लगाने का आह्वान करने में अपना पूरा प्रयास किया. जैसा कि अनुमान था, इस साधारण सूत्र ने लाखों भारतीयों की भावनाओं को एक सूत्र में पिरोने में मदद की. चाहे सड़कें हों या सामुदायिक भवन, सैकड़ों हिंदू और मुसलमान एक-दूसरे को राखी बांधने के लिए एकत्र हुए, जो ब्रिटिश सरकार की विभाजनकारी नीतियों के खिलाफ विरोध का प्रतीक था.

अगले छह वर्षों तक कोलकाता, ढाका और सिलहट में व्यापक विरोध प्रदर्शन जारी रहे, जब तक कि औपनिवेशिक सरकार के पास कोई विकल्प नहीं बचा. 1911 में, अंग्रेजों ने अंततः विभाजन वापस ले लिया, जो भारत के स्वतंत्रता संग्राम के इतिहास में एक बड़ी जीत थी. इस जीत के बाद हुए राजनीतिक उथल-पुथल के बावजूद, इतिहास के पन्नों के बीच छिपी यह घटना बंगाल और देश के अन्य हिस्सों में सांप्रदायिक सद्भाव का जीवंत उदाहरण बनी हालाँकि विरोध प्रदर्शनों का अपेक्षित प्रभाव पड़ा, लेकिन अंततः बंगाल को एकजुट रखना असंभव साबित हुआ. 1912 में, बिहार, असम और ओडिशा बंगाल से अलग कर दिए गए. इस बार विभाजन भाषाई आधार पर हुआ था. पैंतीस साल बाद, प्रत्यक्ष कार्रवाई दिवस के रक्तपात के साथ, एकीकृत बंगाल का सपना आखिरकार टूट गया.

महाकौशल की डायरी

गोपनीय रिपोर्ट कहीं संगठन से न करा दे छुट्टी....

अविनाश दीक्षित

विधानसभा 2023 और बाद में लोकसभा 2024 में मिली जीत का रिकॉर्ड बनाए रखने के लिए भाजपा के प्रदेश अध्यक्ष हेमंत खंडेलवाल जुट गए हैं, खबर है कि पार्ट टाईम काम कर रहे लोगों को अब संगठन में तरजीह नहीं मिलेगी. नए मुखिया के फरमान को लेकर महाकोशल के जबलपुर, कटनी, नरसिंहपुर, सिवनी, छिंदवाड़ा, बालाघाट, मंडला और डिंडोरी जिलों में उन जमीनी स्तर के पार्टी नेता- कार्यकर्ता भविष्य के प्रति आशान्वित हो गए हैं, वहीं पार्टी में राजनीति सिर्फ पार्ट टाइम के रूप में करने वाले चिंतित नजर आने लगे हैं.

संगठन से पार्ट टाइम जुड़े होने वाले नेता-कार्यकर्ताओं की सेवाएं कितने दिन की और बचीं हुईं हैं ये तो आने वाला समय ही बताएगा, लेकिन संगठन स्तर पर ऐसे नेता-कार्यकर्ताओं की सूची बनाने की जिम्मेदारी गोपनीय तरीके से बनाकर मुख्यालय भेजने की तैयारियां कर लीं गई हैं. गौरतलब है कि भाजपाई राजनीति का एक प्रमुख केंद्र महाकौशल को माना जाता है जहां से पार्टी का अगला चरण क्या होगा, ये तय किया जाता रहा है. इसलिए आगामी चुनावों में भाजपा कहीं से भी कमजोर न हो इसका मुख्यतः ध्यान अभी से रखा जाने लगा है. वहीं पार्टी के लिए 24 घंटे समर्पित रहने वाले नेता-कार्यकर्ता अपने आप को इस फरमान के बाद से बेहतर स्थिति में पा रहे हैं. उन्हें उम्मीद है कि प्रदेश के नए मुखिया के नजरो-करम उन पर जल्द पड़ेंगे और उन्हें भाजपा में नए पद पर जिम्मेदारियां सौंप दी जाएंगीं. प्रदेश भाजपा के मुखिया हेमंत खंडेलवाल कार्यकर्ता मिलन कार्यक्रम के जरिए अलग-अलग जिलों व शहरों में जाकर संगठन की नब्ज भी टटोल रहे हैं जो कि आगमी चुनावी रणनीति का एक अहम हिस्सा माना जा रहा है.

बात करें जबलपुर भाजपा की तो यहां पार्टी 3 गुटों में विभाजित सी नजर आती है. पहला गुट सांसद आशीष दुबे का, दूसरा लोक निर्माण मंत्री और तीसरा विधायक अभिलाष पांडे का.. इन तीनों गुटों में भाजपा के नेता-कार्यकर्ता अपने-अपने चहेतों के प्रति समर्पित होते नजर आए हैं जो कि संगठन स्तर पर वरिष्ठों के लिए चिंता का सबब बना हुआ है. संगठन के वरिष्ठों की मानें तो ये गुटबाजी जितनी जल्दी खत्म हो उतना ही अच्छा रहेगा नहीं तो आने वाले समय में कहीं ये गुटबाजी पार्टी को नुकसान न पहुंचा दे और विपक्ष इसका फायदा न उठा ले, यह बात भी संगठन स्तर के वरिष्ठों और प्रदेश के नए मुखिया हेमंत खंडेलवाल तक पहुंच चुकी है.

एक-दूसरों के हेलमेट के सहारे मिल गया पेट्रोल....

पहले बच्चों की सुरक्षा के लिए ई-रिक्शा में बच्चों के आवागमन पर प्रतिबंध तो अब आमजन की जिंदगियों की सुरक्षा के लिए बिना हेलमेट के पेट्रोल नहीं देने का जारी किया गया प्रतिबंधात्मक आदेश... कलेक्टर दीपक सक्सेना के हाल ही में जारी किए गए ये दोनों आदेश इन दिनों सुर्खियों में हैं. जारी आदेश के पहले दो दिनों में जबलपुर में जो दृश्य देखे गए वो काफी हैरान कर देने वाली रहे.. देखा गया कि अधिकांश पेट्रोल पंपों में एक या दो वाहन चालक हेलमेट लेकर पहुंचे जिसके पीछे लंबी कतार में लगे लोग उन दोनों के हेलमेट के भरोसे ही अपने वाहनों में पेट्रोल भरवाते नजर आए. वहीं कुछ पेट्रोल पम्प के सामने हेलमेट की दुकान सजीं दिखीं, जहां से किराए पर हेलमेट दिये जा रहे थे. मतलब साफ था ऐ भाई जरा रूकना, आदेश तो जारी हो गया है लेकिन मैं अपना हेलमेट भूल गया, देना जरा, मैं पेट्रोल भरवाकर वापस करता हूं. कुछ इस तरह का नजारा शहर के अधिकांश पेट्रोल पंपों में नजर आया. गौरतलब है कि जबलपुर जिले में बीते कुछ माहों में हुए सड़क हादसों में देखा गया कि जो व्यक्ति हादसे में मृत हुए उनमें अधिकतर लोग सिर पर हेलमेट नहीं पहने थे. अगर ये दो पहिया वाहन चालक सिर में हेलमेट पहने होते तो सिर में चोट नहीं लगती और इन्हें अपनी जिंदगी से हाथ नहीं धोना पड़ता.

सचिन ने की बुमराह की क्षमता की तारीफ

किसी प्रतिभाशाली या विलक्षण खिलाड़ी की क्षमता पर व्यर्थ ही सवालिया निशान लगाना ठीक नहीं है. जसप्रीत बुमराह को लेकर चर्चा शुरू है कि जिन 2 टेस्ट मैचों में वह नहीं खेला, वह मैच भारत ने उसके बिना ही जीत लिए. इसलिए टीम इंडिया बुमराह के बगैर भी विजयी हो सकती है. इस तरह यह जताने की कोशिश की गई कि बुमराह टीम के लिए पनौती हैं. ऐसे मौके पर भारत रत्न मास्टर ब्लास्टर सचिन तेंदुलकर सामने आए और उन्होंने स्पष्ट शब्दों में कहा कि बुमराह की अनुपस्थिति में भारतीय टीम ने 2 टेस्ट मैच जीते, जिससे सीरीज बराबरी में छूटी, यह केवल योगायोग है. इससे बुमराह का महत्व कम नहीं होता. बुमराह ने सीरीज के 3 मैचों में खेलते हुए 14 विकेट लिए. प्रथम टेस्ट की पहली पारी में 5 खिलाड़ियों को आउट कर उसने प्रभाव निर्मित किया. दूसरे टेस्ट में वह नहीं खेला लेकिन तीसरे और चौथे टेस्ट में उसने एक बार फिर 5 विकेट लिए. इससेउसकी क्षमता और टीम की ताकत नजर आई. इस तरह की आलोचना बिल्कुल अनुचित है कि जिस टेस्ट मैच में बुमराह खेलता है उसमें भारत हार जाता है. सचिन ने कहा कि बुमराह की क्षमता विशिष्ट है. वह निरंतर परफार्मेंस देने वाला खिलाड़ी है. मैं उसे सर्वाधिक ऊंचे दर्जे का फास्ट बॉलर मानता हूं. बुमराह व सिराज की तुलना की जाए तो आंकड़ेवारी में बुमराह काफी आगे है. उसने 48 टेस्ट मैचों में 219 विकेट लिए है जबकि मोहम्मद सिराज ने 41 टेस्ट मैचों में 123 खिलाड़ियों को आउट किया है. कहा जाता है कि पांचवें टेस्ट को जीतकर सीरीज बराबर करने के लिए बुमराह मैच से पीछे हट गए और सिराज को जिम्मेदारी दी गई, इस पर टीम प्रबंधन ने स्पष्ट किया कि बुमराह को विश्राम देना अत्यावश्यक था. सचिन तेंदुलकर ने बुमराह का पक्ष लेने के अलावा वॉशिंगटन सुंदर की भी तारीफ की और कहा कि वह क्षण महत्वपूर्ण था जब पांचवें दिन लंच के पहले उसने बेन स्टोक्स का विकेट लिया.

निशानेबाज

बार-बार लगाते दिल्ली का चक्कर शिंदे को ऐसी कौन सी फिकर

पड़ोसी ने हमसे कहा, निशानेबाज, महाराष्ट्र के उपमुख्यमंत्री एकनाथ शिंदे बार-बार दिल्ली क्यों चले जाते हैं? इस बार भी वह कैबिनेट की अहम बैठक छोड़ दिल्ली चले गए? क्या वह महायुति में अपनी कम हो रही पकड़ से दुखी हैं अथवा उन्हें लगता है कि मुख्यमंत्री देवेंद्र फडणवीस डिप्टी सीएम अजीत पवार को उनसे ज्यादा महत्व दे रहे हैं? शिंदे के नगर विकास विभाग के किसी भी प्रोजेक्ट की फाइल मुख्यमंत्री के पास जाएगी. सीएम की अनुमति के बाद ही विधायकों को फंड वितरित किए जाएंगे.

हमने कहा, कहा, शिंदे की परेशानी के मुद्दे और भी हो सकते हैं. ऐसा माना जा रहा है कि महाराष्ट्र में सितंबर माह में बड़ा राजनीतिक उलटफेर हो सकता है जब सुप्रीम कोर्ट शिवसेना के नाम और चुनाव चिन्ह मामले का फैसला करेगा. इसके साथ ही उद्धव ठाकरे का साथ छोड़कर शिंदे की पार्टी में शामिल होने वाले विधायकों की अयोग्यता के मुद्दे पर भी निर्णय लेगा. इस संबंध में तेलंगाना विधायकों का मामला संकेत सूचक बन सकता है. सुप्रीम कोर्ट ने

तेलंगाना विधानसभा के अध्यक्ष को निर्देश दिया कि भारत राष्ट्र समिति की पार्टी छोड़कर सत्तारूढ़ कांग्रेस में शामिल हो जाने वाले 10 विधायकों को अयोग्य घोषित करने संबंधी याचिकाओं पर 3 माह के भीतर फैसला करें. उसे लटकाए न रखें.

पड़ोसी ने कहा, निशानेबाज, महाराष्ट्र में भी मामला लंबे समय से अटका हुआ है. 2022 में उद्धव ठाकरे से बगावत कर शिवसेना का एक हिस्सा एकनाथ शिंदे के नेतृत्व में टूटकर अलग हुआ. इस वजह से महाविकास आघाड़ी सरकार गिर गई थी और बीजेपी ने अपने इस ऑपरेशन लोटस के बाद शिंदे सेना को साथ देकर महायुति सरकार बनाई थी. यदि तेलंगाना के विधानसभा स्पीकर को दिया गया निर्देश सुप्रीम कोर्ट ने महाराष्ट्र के मामले में भी दोहराया तो शिंदे के लिए परेशानी खड़ी हो जाएगी. सुप्रीम कोर्ट ने कहा कि या तो हम संविधान की 10वीं अनुसूची का गंभीरता से पालन करें और यदि नहीं पालन करना है तो उस पर पुनर्विचार करें. सुप्रीम कोर्ट यह मामला बड़ी बेंच को भी भेज सकता है. सोचिए कि यदि शिंदे के विधायक अयोग्य करार दिए गए तो क्या होगा?

हमने कहा, राजनीति में अनिश्चितता बनी रहती है. जब तक तकदीर साथ दे नेता मुकद्दर का सिकंदर बना रहता है. बाद में क्या होगा कोई कह नहीं सकता.

संपादकीय बोर्ड | प्रबंध संपादक : सुमीत माहेश्वरी, समूह संपादक : क्रांति चतुर्वेदी

शब्द-सागर : डॉ. सागर खादीवाला

CROSS WORD 11988 - डॉ. सागर खादीवाला

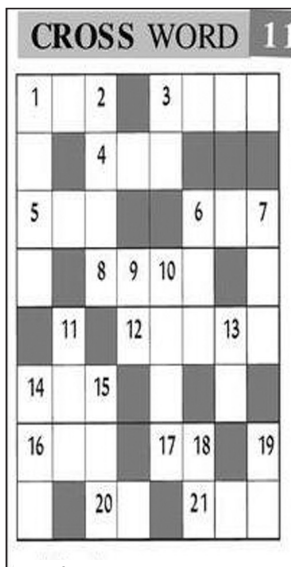

ऊपर से नीचे

1. किसी काम के लिए की जाने वाली युक्ति या उपाय, दांवपेंच, छलकपट 2. मन में सोचा हुआ, मनचाहा 3. अधिक, लंबा चौड़ा, उम्र में अधिक 6. पुरस्कार 7. ऊंट बैल आदि के नाक में बंधी हुई रस्सी 9. बौना, कम ऊंचा 10. बचपन का मित्र 11. वह व्यय जो किसी वस्तु को बनाने में खर्च होता है 13. किसी के टोकने से नजर का होने वाला अनिष्ट परिणाम, टोकने की क्रिया या भाव 14. खाली या निरुद्यम का भाव, वह अवस्था जिसमें निर्वाह के लिए किसी के हाथ में कोई काम धंधा न हो 15. मना करने की क्रिया या भाव 18. वृद्धि, बरकत, सखी 19. घोड़े की पीठ पर रखने की गद्दी, काठी

बाएं से दाएं

1. विश्राम, सुख, स्वास्थ्य, थकावट मिटाना 3. ताकतवर, शक्तिशाली 4. डंका, धौंसा 5. तोप चलाने वाला 6. मनुष्य, मानव 8. कपड़े की बुनावट में लंबाई और चौड़ाई के बल बुने हुए सूत 12. बहाना, टालने की क्रिया 14. स्त्रियों के लिए आदरसूचक शब्द, रानी, पत्नी, ताश का एक पत्ता (उर्दू) 16. चखें, तकली आदि पर रूई या उनसे धागा निकालना 17. विशेष, मुख्य, प्रधान 20. रहित, शून्य, तुच्छ 21. उत्तर पूर्व का कोना, स्वामी

Solution 11987

म	ल	का	ना	■	छि	पा	ना
ग	र	मा	ना	■	प	रा	ग
क	■	पा	■	ब	क	■	पु
■	का	नी	उं	ग	ली	■	र
आ	म	■	डे	रा	■	पा	■
मा	■	छ	ल	ना	■	य	क्ष
श	क	■	ना	■	सु	दा	मा
य	म	न	■	क	त	र	ना

ज्योतिषाचार्य प्रियंका नारायणशंकर व्यास, कोतवाली बाजार, जबलपुर (म.प्र.)

आज जिनका जन्मदिन है

वर्ष के प्रारंभ में वाहन का सुख मिलेगा, शिक्षा प्रतियोगिता में सफलता के योग हैं, कार्यक्षेत्र में वृद्धि होगी, वर्ष के मध्य में दिनचर्या में व्यवधान आयेगा, पारिवारिक समस्या में व्यस्तता रहेगी, अधिकारी के कोप का सामना करना होगा, मन व्यथित रहेगा, वर्ष के अन्त में धार्मिक कार्यों में सफलता मिलेगी, संबंधों में प्रगाढ़ता आयेगी, स्थिति सुधरेगी.

मेष और वृश्चिक राशि के व्यक्तियों को दिनचर्या में व्यवधान आयेगा, मन व्यथित रहेगा, वृष और तुला राशि के व्यक्तियों को वाहन का सुख मिलेगा, कर्क राशि के व्यक्तियों को धार्मिक कार्यों में सफलता मिलेगी, संबंधों में प्रगाढ़ता आयेगी, सिंह राशि के व्यक्तियों का मन परेशान रह सकता है, अधिकारी से मतभेद बढ़ेंगे, मिथुन और कन्या राशि के व्यक्तियों को व्यवसायिक मामलों में स्थिति सामान्य रहेगी, मकर और कुंभ राशि के व्यक्तियों को शिक्षा आदि में लाभ होगा, धनु और मीन राशि के व्यक्तियों को पारिवारिक कार्यों में व्यस्तता रहेगी.

आज जन्मे शिशु का भविष्य

आज जन्म लिया बालक स्वस्थ्य, सुन्दर, हृष्टपुष्ट और मधुरभाषी, परिश्रमी, चतुर होगा,बुद्धिमान, व्यवसायिक दृष्टिकोण वाला होगा, सबको लोकप्रिय होगा, 8 वर्ष की आयु तक तकलीफउठायेगा, बाद में अच्छा रहेगा, विद्या के क्षेत्र में रूचि रहेगी, खेलकूद के प्रति विर्शष आकर्षित रहेगा.

उदयकालीन ग्रह चाल

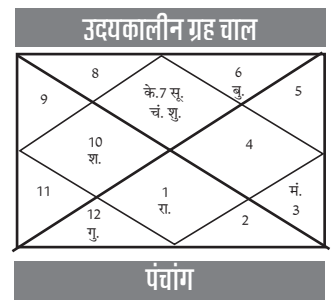

पंचांग

रा.मि. 18 संवत् 2082 श्रावण शुक्ल पूर्णिमा शनिवासरे दिन 1/24, श्रवण नक्षत्रे दिन 3/30, आयुष्मान योगे प्रातः 5/56 तदुपरि सौभाग्य योगे रातअंत 4/25, वव करणे सू.उ. 5/29 सू.अ. 6/31, चन्द्रचार मकर रात 3/27 से कुम्भ, पर्व- स्नानदान पूर्णिमा, शु.रा. 10,12,1,4,5,8 अ.रा. 11,2,3,6,7,9 शुभांक- 3,5,9.

व्यापार भविष्य

श्रावण शुक्ल पूर्णिमा को श्रवण नक्षत्र के प्रभाव से जीरा, धनियां, लालमिर्च, अजवाईन, जाबित्री के भाव में तेजी होगी, चांदी, रूई, सरसों, सूरजमुखी के भाव में मंदी होगी, बाजार का रूख देखकर व्यापार करें. भाग्यांक 4110 है.

मेष- किसी रिश्तेदार या पड़ौसी से विवाद होगा, मांगलिक कार्यों के प्रति उत्साह बना रहेगा, विरोधी वर्ग पराजित होगा, शुभ सूचना मिलेगी.

वृषभ- भूमि भवन के क्रय-विक्रय से लाभ होगा, मातृपक्ष से शुभ समाचार मिलेगा, स्वास्थ्य संबंधी शिथिलता रहेगी, कार्यों में व्यस्तता रहेगी.

मिथुन- यात्रा में सावधानी रखें, व्यर्थ की परेशानी और तनाव से बचें, जीवनसाथी का सहयोग रहेगा, युवाओं को रोजगार के अवसर प्राप्त होंगे.

कर्क- ले देकर काम करने की योजना सफल होगी, अधिकारियों के सहयोग से आर्थिक लाभ होगा, धन एवं ऐश्वर्य की प्राप्ति होगी, मनोरंजक स्थल की सैर होगी.

सिंह- वैचारिक गतिरोध दूर होगा, कारोबारी यात्रा सफल रहेगी, मन प्रसन्न रहेगा, मामा पक्ष से लाभ होगा, पारिवारिक प्रतिष्ठा में वृद्धि होगी.

कन्या- आकस्मिक लाभ के अवसर मिलेंगे, रूखे व्यवहार से परिचित नाराज हो सकते हैं, यात्रा में उठाईगीरों से सावधानी रखें, पूज्य व्यक्ति की चिन्ता रहेगी.

तुला- समय के अनुसार तौर तरीकों में बदलाव लाभकारी रहेगा, मनोरंजक यात्रा की योजना बनेगी, संतान के दायित्वों की पूर्ति होगी, व्यवसनों से दूर रहें.

वृश्चिक- घरेलू मामले सुलझाने में सफलता मिलेगी, मेलजोल लाभकारी रहेगा, किसी पारिवारिक समारोह में भाग लेना होगा, माता पिता का सहयोग रहेगा.

धनु- विवादास्पद मामले सुलझेंगें, कोई मूल्यवान वस्तु खोने का डर है, अतः अपने सामान की सुरक्षा व्यवस्था स्वयं करें, संतान की चिन्ता दूर होगी.

मकर- ऐसा कोई कार्य बनेगा, जिससे आपकी आर्थिक स्थिति दृष्टिकोण और समृद्धि में वृद्धि होगी, दाम्पत्य जीवन सुखमय बना रहेगा, अधिक जल्दबाजी न करें.

कुम्भ- आर्थिक एवं व्यवसायिक दिशा में किया गया प्रयास सार्थक होगा, संबंधों में प्रगाढ़ता आयेगी, राजकीय क्षेत्र में सफलता प्राप्त होने का योग है.

मीन- मित्रों का समागम होगा, यथेष्ट सहयोग मिलेगा, मानसिक रूप से आप स्वस्थ्य रहेंगें, नवीन कार्यों की योजना पर विचार विमर्श होगा.

SUDOKU 7120

2	9			5				4
4			2		7		8	
	1	6		8				3
8		5		9				7
3	6			2			1	9
1				3		5		2
5				7		6	3	
	3		1		8			5
9				6			2	1

■ प्रत्येक पंक्ति में 1 से 9 तक के अंक भरे जाने आवश्यक है. इनका क्रमवार होना आवश्यक नहीं है. आड़ी और खड़ी पंक्ति में एवं 333 के वर्ग में किसी भी अंक की पुनरावृत्ति न हो इसका विशेष ध्यान रखें. ■ पहले से मौजूद अंकों को आप हटा नहीं सकते. ■ पहेली का केवल एक ही हल है.

नवभारत सू-दोकू 7119

7	8	1	6	9	4	2	5	3
2	6	4	5	3	6	1	7	9
5	3	9	1	2	7	4	6	8
9	5	8	7	4	1	3	2	6
1	2	3	9	5	6	7	8	4
4	7	6	3	8	2	9	1	5
3	9	7	2	6	5	8	4	1
6	4	2	8	1	9	5	3	7
8	1	5	4	7	3	6	9	2